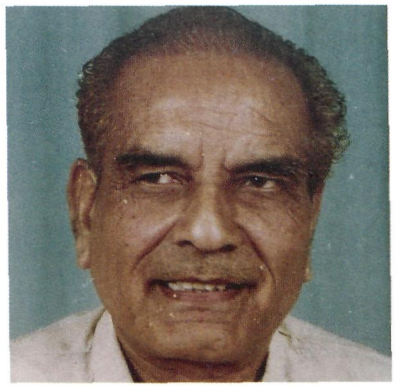

हशमत अली खान

अकादेमी पुरस्कार– हिन्दुस्तानी वाद्य संगीत (तबला)

श्री हशमत अली खान का जन्म संगीतकारों के पारंपरिक परिवार में 1 अक्तूबर 1945 को उत्तर प्रदेश के मेरठ शहर में हुआ था। श्री खान ने तबला बजाने का प्रशिक्षण अपने दादा मोहम्मद शफी खान से प्राप्त किया था। बाद में उनकी इस कला को निखारने का काम अजरादा घराने के प्रतिष्ठित तबला कलाकार नियाजु खान ने किया था। आपने अपने करियर की शुरूआत श्री राम भारतीय कला केन्द्र, नई दिल्ली से सहवादक के रूप में की थी और बाद में तबला अध्यापक बने। उसके बाद, आपने शुरू में श्रीनगर और बाद में दिल्ली के आकाशवाणी केन्द्र में स्टाफ कलाकार के रूप में सेवाएं प्रदान की थी।

अग्रणी तबला वादक के रूप में मान्यता प्राप्त करते हुए श्री हशमत अली खान 1960 से लगातार उत्सवों में प्रस्तुति पेश कर रहे हैं। आपने अमजद अली खान, बिरजू महाराज, शम्भु महाराज, और हाफ़िज अली खान जैसी शख्सियतों सहित कई प्रतिष्ठित संगीतकारों, गायकों तथा वाद्यकारों दोनों, के साथ रहकर उत्कर्ष प्राप्त किया है। राजधानी में, आपने अजरादा घराने की तबला अकादेमी भी स्थापित की है जहां कई विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करते हैं। आपने भारत तथा विदेश में प्रस्तुति पेश की हैं और ताल पर कई सेमिनारों तथा कार्यशालाओं में भाग लिया है। आपने कई रिकॉर्डिंग्स निकाली हैं, जिनमें संयुक्त राज्य (अमेरिका) में भारतीय अभिलेखागार संगीत द्वारा निकाली गई तबला सोलो शामिल है।

श्री हशमत अली खान को हिन्दुस्तानी वाद्ययंत्र संगीत में अपने योगदान के लिए संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।